स्वांतः सुखाय

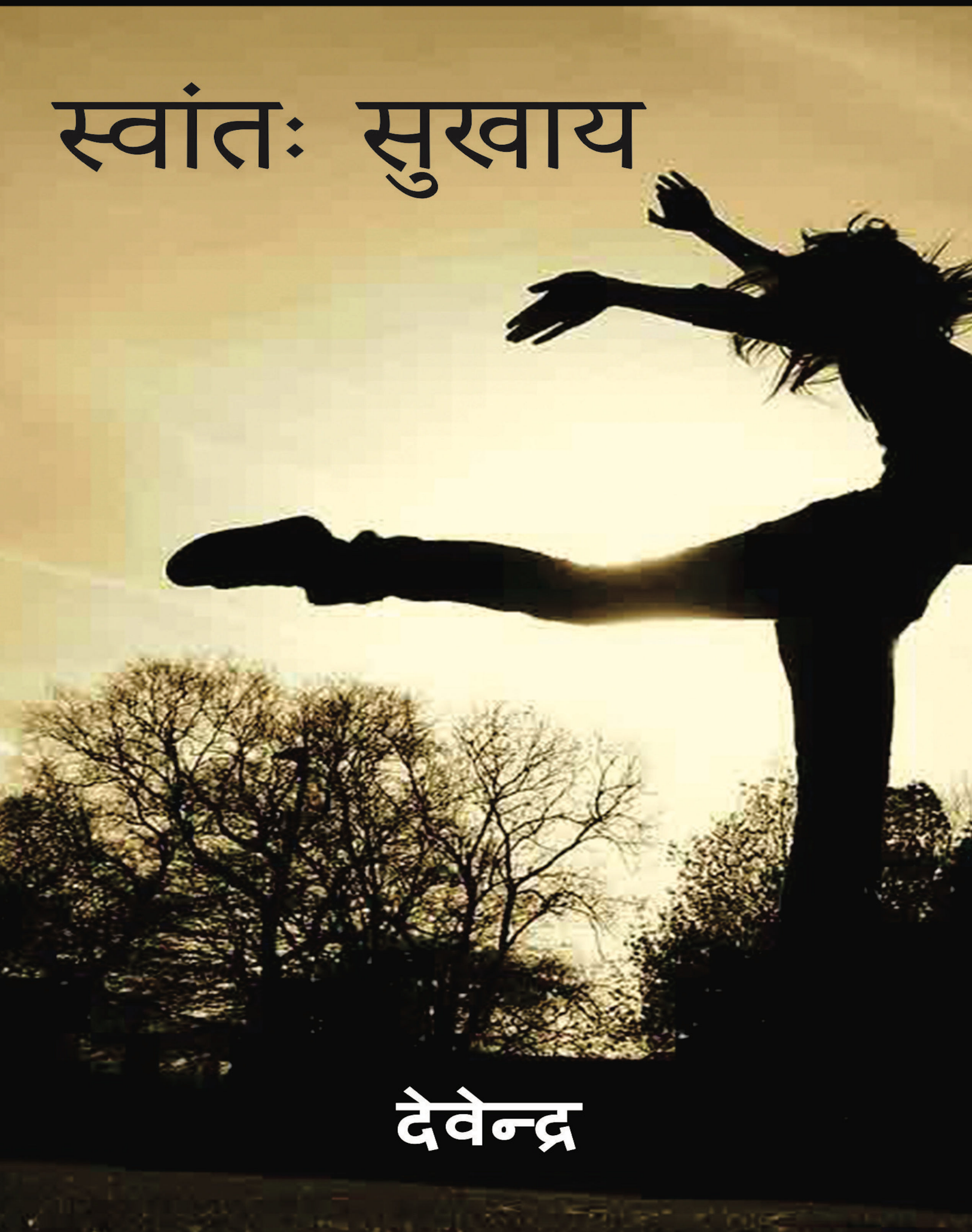

देवेन्द्र

स्वांतः सुखाय

देवेंद्र

यह अस्सी चौराहे की सबसे प्रतिष्ठित और पुरानी चाय की दुकान है। बनारस वाले इसे साहित्य और कला का एकमात्र केंद्र मानते हैं। उन लोगों के विचार से ये प्रतिभाएँ यहीं अंकुरित होती हैं। रोपने के समय दिल्ली, भोपाल या पटना में चाहे जो बाजी मार ले जाय। बारह आने के एक गिलास चाय और चार आने में भाँग की एक गोली, तरह-तरह के लोग सुबह-से ही आने शुरू हो जाते हैं। यहाँ मौलिक खबरों का बाजार इतना गर्म रहता है कि दुकानदार ने आज तक अखबार खरीदने की जरूरत नहीं महसूस की। शरीफ लोग इस दुकान में कभी नहीं आते हैं। उनका कहना है कि एक तो इस दुकान में चाय देर से मिलती है और दूसरे शोर बहुत होता है। लेकिन जो बनारसी होते हैं वे शरीफ कम होते हैं।

अगर आप यह मानते हों कि आजकल के साहित्य को लेकर जनता में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है, अगर आपकी चिंता जनता के अराजनीतिकरण को भी लेकर बढ़ रही हो, तो मेरा आपसे निवेदन है कि आप एक बार यहाँ जरूर आएँ। आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। बगल में दीक्षित जी की पत्रिका वाली दुकान है। वहाँ आप घंटों बैठकर मुफ्त में कोई अखबार, कोई पत्रिका पढ़ सकते हैं। आप एक बार जरूर आएँ। यहाँ लोग हर विषय पर समान अधिकार से बात करते हैं औरत पर भी और अध्यात्म पर भी।

आजकल शहर के बनियों ने सफलता और सार्थकता को आपस में इतना घुला मिला दिया है कि आम तौर पर लोग इनके बीच का फासला भूलकर इन्हें एक मान बैठे हैं। जबकि यहाँ बैठने वाले आज भी दोनों का अंतर समझते हैं। ये लोग सफलता का अर्थ जानते हैं। उसमें एक खूबसूरत बीवी होती है। दो या तीन बच्चे होते हैं। साफ-सुथरा ड्राइंग रूम होता है। आटा, चावल, चीनी, चाय और दूध का हिसाब होता है। मेहमानों की चिंता होती है। सफल लोगों की दुनिया शेषनाग के फन पर टिकी होती है। और उस फन में सबसे कीमती मणि होती है। मणि के लिए सफल लोग नरक के रास्ते पर चलते जाते हैं। अकेले-अकेले। इसलिए यहाँ बैठने वालों को अपनी असफलता का कोई मलाल नहीं है। वहाँ कोने में बैठा हुआ आदमी जिसके कंधों पर झोला टँगा हुआ है, वह अपने आसपास के लोगों को एक कविता सुना रहा है।

दुकान में एक तरफ बैठा हुआ प्रभात सिगरेट पीते हुए ध्यान से कविता सुन रहा है। वह अपने मरे हुए बाप के बारे में सोच रहा है। वह उस औरत के बारे में भी सोच रहा है जिसने आज उसे सिनेमा दिखाने के लिए बुलाया